मृच्छकटिकम्

प्र० :- मृच्छकटिकम् में वर्णित रस विवेचन ।

उ० रस रूपक का मुख्य तत्व होता है । विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से सहृदय सामाजिक को जिस अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती है, वही रस कहलाता है । इस रस की प्रतीति कराना ही रूपकों का प्रयोजन है । रूपक के दशविध भेदों में प्रकरण नामक भेद का अंगीरस शृंगार माना जाता है । मृच्छकटिक प्रकरण का भी अंगीरस शृंगार है । इसमें शृंगार के संभोग शृंगार को कवि ने अंगीरस शृंगार ~~माना है~~ के रूप में वर्णित किया है । इसमें विप्रलम्भ करुण, हास्य, वीरादि रसों का प्रयोग भी यत्र-तत्र दिखाई देता है । कवि ने अपनी अनुभूतिमय एवं संवेदनशील कल्पना के प्रसाद द्वारा मृच्छकटिक में इतने रससिक्त प्रसंगों की अवतारणा की है कि सारा प्रकरण वेदनाजनित आँसुओं का एक सागर-सा बन गया है । पात्रों के चरित्रांकन में, वातावरण की सजीवता में, उद्देश्य की प्राणवत्ता में, प्रकृति के उत्कृष्ट कलात्मक वर्णन में शृंगार की सुसम्बद्ध अभिव्यक्ति जो इस प्रकरण में हुई है संस्कृत के अन्य नाटकों में मिलना दुर्लभ है । शृंगार का ये चित्र अति मनोहारी है ।

'धन्यानि तेषां खलु जीवितानि ये कामिनीनां
दृष्टेमागतानाम् ।
आर्द्राणि मेघोदकशीतलानि गात्राणि गात्रेषु
परिष्वजन्ति ॥

'अपने घर पर वर्षा में भींग कर आई हुई भींगी प्रेयसियों को अपनी बाँहों में जकड़कर जो प्रेमी आलिंगन करता है, निश्चय ही उसका जीवन धन्य है।'

वसन्तसेना के शृङ्गारोद्दीपक रति का वर्णन विट की निम्न उक्ति में एक हृदयवेधक एवं मार्मिक अनुभूति का मानो साक्षात्कार करा देता है —

' किं यासि बालकदलीव विकम्पमाना रक्तांशुकं पवनलोलदशं वहन्ती।
रक्तोत्पलं प्रकरकुड्मलमुत्सृजन्ती टङ्कैर्मनः शिलागुहेव विदार्यमाणा॥

' अर्थात 'अरी ओ वसन्तसेने, डर कर इस तरह क्यों भाग रही हो? सरल कोमल केले के पत्ते की तरह थरथर काँपते हो तुम्हारे लाल-लाल आँचल हवा में लहरा रहे हैं। तुम्हारे भागते हुए कमल कोमल पैर जो राजमार्ग के कुट्टिम पर उठ गिर रहे हो, वे लगते हैं मानो लाल-लाल कमल के फूलों को ही बिखेर रहे हों।

मृच्छकटिक प्रकरण चारुदत्त और वसन्तसेना के पारस्परिक प्रेम पर आधारित है। ऐसा माना जाता है कि सामान्य गणिका का प्रेम रस की कोटि तक नहीं पहुँचता है वह 'रसाभास' ही रहता है परन्तु इस प्रकरण में गणिका वसन्तसेना का प्रेम कुलनारी के समान अनन्य है अतः यह प्रेम रस की कोटि तक पहुँच जाता है। प्रथम अंक में चारुदत्त वसन्तसेना के सौन्दर्य पर अनुरक्त हो जाता है। पंचम अंक में वसन्तसेना चारुदत्त से मिलने जाती है।

यहाँ मेघों के गर्जन और दुर्दिन का अन्धकार तथा विद्युत की चमक दोनों के मिलन के उद्दीपन के रूप में सहायक होते हैं। मेघों ने चारुदत्त के प्रेम को उद्दीप्त कर दिया है

ओ मेघ, गम्भीरतरं नद त्वं तव प्रसादात् स्मरपीडितं मे।

स्पर्शं प्रमाणितकाराविर्भावसात तदपि कम्पयमुमयते यामम्।

मृच्छकटिक के प्राकृतिक वर्णन की प्रमुख विशेषता इसमें निहित प्रकृति का मानवीकृत चित्रण है। प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव एवं स्वच्छ चित्र इसमें देखते ही बनता है। कवि के प्रकृतिवर्णन में जो नाममात्र है। भाषा का माधुर्य और भावों का कल्पनामय चित्रण प्रचुरमात्रा में उपलब्ध है। सुकुमार कल्पना, लालित्यपूर्ण पदयोजना और सरस भावों का अपूर्व संयोग इसके वर्णन के प्राण हैं प्रकृति की शोभा और सौन्दर्य की मनोहर छवियाँ मुखर हो उठी हैं। वर्षा भीषण काली रात है जो ईर्ष्या उसकी हँसी उड़ाती हुई बिजली वसन्तसेना को अपनी सौत सी किवाड़ पड़ती राह रोक रही हो

" मूढे। निरन्तरपयोधरया मयैव कान्तः सहाभिरमते यदि किं तवात्र।

माँ गर्जितैरिति मुहुर्विनिवारयन्ती मार्गं रुणद्धि कुपितेव निशा सपत्नी।

हास्य और व्यङ्ग्य की दृष्टि से मृच्छकटिक एक सफल प्रकरण रूपक है शूद्रक ने इस प्रकरण में नाना प्रकार के हास्य रस का प्रयोग किया है।

विदूषक और शकार जैसे पात्रों के संवादों में हास्य रस का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग दिखाई देता है। ~~प्रकर~~ प्रकरण के ~~द्वितीय~~ द्वितीय अंक में द्यूतकारों के पारस्परिक झगड़े में हास्य रस की झलक दिखाई देती है। इसके ~~अति~~ अतिरिक्त वसन्तसेना के भवन विषयक वर्णन में, व्यङ्ग्य उक्तियों में अथवा प्रश्नोत्तरों में भी कवि ने हास्य रस की अभिव्यञ्जना की है।

इस तरह हम देखते हैं कि इस प्रकरण का अंगी रस श्रृंगार है। यह प्रारम्भ में सम्भोग बाद में ~~विप्र~~ विप्रलम्भ, पुनः सम्भोग, फिर विप्रलम्भ और पुनः संयोग श्रृंगार का वर्णन मिलता है। कहीं भयानक, शान्त और वीर रस की भी झलक मिलती है। द्वितीय अंक में खुण्डमोडक हाथी द्वारा मचायी गयी भगदड़ ~~के~~ में भयानक रस का प्रयोग मिलता है तो वहीं आठवें अंक में बौद्ध भिक्षु के संवादों में शान्त रस। शर्विलक के संवादों में युद्धवीर नामक वीर रस का प्रभेद अभिव्यञ्जित होता है तो चारुदत्त के वर्णन में शान्ति।

इस प्रकार इस प्रकरण में कवि ने सभी रसों का समुचित प्रयोग किया है। यही कारण है कि यह प्रकरण अपने आप में अनोखा है।